**भा.कृ.अनु.प.-भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, खंडवा रोड, इन्दौर-452001**

**फ़ाइल् क्रमांक. प्रेस नोट/प्रेस व पब्लिसिटी/2021/29 दिनांक 24.04.2022**

**भारत की "आजादी का अमृत महोत्सव" के उपलक्ष्य में भारत सरकार के "अन्नदाता देवों भव: अभियान के अंतर्गत आईसीएआर-आईआई एसआर में दिनांक 23.04.2021 को "जैविक सोयाबीन उत्पादन " शीर्षक पर आयोजित कृषक संगोष्टी की प्रेस विज्ञप्ति**

सोयाबीन अनुसन्धान कार्यक्रमों के सफल आयोजन लिए लोकप्रिय भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान सस्थान , सोलिडेरीडेड एवं आई टी सी लिमिटेड के संयुक्त प्रयास से आज दिनांक 23 अप्रैल को "आजादी का अमृत महोत्सव" एवं "अन्नदाता देवों भव: अभियान" के अंतर्गत "जैविक सोयाबीन उत्पादन" विषय पर ज़ूम एप्प तथा संस्थान के youtube चैनल पर ऑनलाइन कृषक संगोष्ठी का आयोजन किया गया. इस कृषक संगोष्ठी में भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान, सोलिडेरीडेड, भोपाल तथा आई टी सी से जुड़े लगभग 750 सोया कृषक/महिलाओं ने भाग लिया.

सगोष्ठी के प्रारंभ में संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ बी.यु. दुपारे ने सभी संस्थान द्वारा सोयाबीन के उत्पादन में वृद्धि, जलवायु परिवर्तन से फसल में होने वाले नुकसान को कम करने के उपाय तथा बढती हुई मांग को देखते हुए जैविक सोयाबीन उत्पादन की पद्धतियों का कृषकों में प्रचार-प्रसार हेतु आई टी सी एवं सोलिडेरीडेड जैसी स्वयंसेवी गैर-सरकारी संगठनो का स्वागत किया. इस अवसर पर संस्थान के डॉ राकेश कुमार वर्मा ने उपस्थितों का स्वागत किया एवं संस्थान द्वारा जैविक सोयाबीन उत्पादन बाबत किये जा रहे अनुसन्धान प्रयोगों को अधिक से अधिक कृषकों तक प्रसार होने की आशा व्यक्त कि.

इस अवसर पर उपस्थित अपने प्रारंभिक उद्बोधन में सोलिडेरीडेड, भोपाल के डॉ सुरेश मोटवानी द्वारा भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान द्वारा किये जा रहे संयुक्त प्रयासों से विगत वर्ष सोयाबीन की अद्ययावत जानकारी के प्रचार-प्रसार के माध्यम से विपरीत मौसम के बावजूत सोयाबीन के उत्पादन में वृद्धि हुई हैं. इसी प्रकार आईटीसी लिमिटेड के श्री निलेश पाटकर ने भी भारतीय सोयाबीन अनुसन्धान संस्थान द्वारा विगत वर्षो में तकनिकी-प्रचार-प्रसार की दिशा में अपनाये गए डिजिटल मीडिया की भूमिका की सराहना की.

इस संगोष्ठी के प्रमुख वक्ता संस्थान के सेवानिवृत्त प्रधान वैज्ञानिक डॉ ओम प्रकाश जोशी ने कहा कि भारत देश हमेशा से जैविक खेती के लिए अग्रसर रहा हैं. ऐतिहासिक दस्तावेजो का हवाला देते हुये उन्होंने बताया कि आजादी के पहले इंदौर में इंस्टिट्यूट ऑफ़ प्लांट इंडस्ट्री नाम का एक अनुसन्धान संस्थान था जहा से अल्बर्ट हॉवर्ड नामक विदेशी वैज्ञानिक ने भारत में परंपरागत रूप से की जा रही जैविक खेती के तरीके सीखकर दुसरे देशो में इसका प्रचार प्रसार किया. उनके अनुसार

जैविक खेती के लिए प्रारंभिक 3 वर्षो का समय अत्यंत महत्वपूर्ण होता है जिसमे किसी भी प्रकार के रसायनों का प्रयोग वर्जित हैं. अत: इस कालावधि में सोयाबीन का उत्पादन कम होने से कृषक हतोत्साहित हो जाते हैं. देश के प्रथम जैविक खेती करने वाले राज्य सिक्किम के उत्पादन आंकड़े प्रस्तुत करते हुए बताया कि वर्ष 2003 से सिक्किम जविक बोर्ड के गठन के बाद 12 वर्षो में सम्पूर्ण जैविक राज्य का दर्जा प्राप्त किया हैं. लेकिन इस दौरान फसलो की उत्पादकता में गिरावट देखी जा रही हैं. अतः अनुकूल क्षेत्रों में जैविक खेती के साथ-साथ समेकित खेती/न्यूनतम रसायनों के उपयोग की खेती का भी चलन होना चाहिए जिससे देश की जनसँख्या के लिए खाद्यान्न सुरक्षा निरंतर सुनिश्चित की जा सके.

इसी प्रकार सोयाबीन के जैविक उत्पादन में सबसे महत्वपूर्ण कीट एवं रोग नियंत्रण के तरीकों के सम्बन्ध में डॉ अमर नाथ शर्मा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि वर्तमान में किसानों द्वारा अनावश्यक तथा मनमाने तरीके से कीटनाशको का प्रयोग किया जा रहा हैं. इसके स्थान पर कीट नियंत्रण के अन्य उपाय जैसे जैविक कीटनाशक, वानस्पतिक अर्क जैसे बबूल, धतुरा एवं सीताफल का अर्क का छिडकाव प्रभावी पाया गया हैं. इसी प्रकार कीट नियंत्रण के अन्य उपाय जैसे ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई, संतुलित पोषण, उचित बीज दर जैसे तरीकों को अपनाना चाहिए. इसी प्रकार डॉ शर्मा ने यह भी बताया की किसान अपने खेतो में जगह-जगह पर पक्षियों के बैठने की व्यवस्था करें एवं लाइट ट्रैप या कीट-विशेष फिरोमोन ट्रैप लगा कर काफी हद तक कीटों का नियंत्रण कर सकते हैं . एक अन्य तरीके "ट्रैप फसल" उदाहरनार्थ सुवा के के बारें में उन्होंने बताया की निश्चित अंतराल पर अंतरवर्ती फसल के रूप में लगाने से अधिकतर कीट सुवा पर आकर्षित होते हैं एवं सोयाबीन की फसल में नुकसान कम होता हैं.

अपने संबोधन में भारतीय सोयाबीन अनुसंधन संस्थान की कार्यवाह निदेशक डॉ नीता खांडेकर ने विश्वास व्यक्त किया की आने वाले वर्षों में संस्थान सोयाबीन की फसल के लिए अधिक से अधिक कृषको को नवीनतम तरीकों बाबत जागरूक कर उत्पादन वृद्धि की दिशा में अग्रेसर हैं. इसी प्रकार उन्होंने बताया कि संस्थान आने वाले मौसम के लिए मिनीकिट के रूप में सोयाबीन बीज उपलब्ध करने के लिए प्रयासरत हैं जिससे कि अधिक से अधिक क्षेत्रों में उन्नत प्रजातियों के बीज का फैलाव हो सके. कार्यक्रम का संचालन डॉ बी.यू. दुपारे प्रधान वैज्ञानिक द्वारा तथा धन्यवाद् ज्ञापन डॉ राघवेन्द्र मदर द्वारा किया गया.

.....